ISSN: 2454- 2695

साहित्य संहिता

Available at http://sahityasamhita.org/

Volume 01 Issue 01
February 2015

ओमप्रकाष वाल्मीकि कृत 'जूठन' में संवेदना

मन्जू चौहान
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
सफीदों (जीन्द)

षोध आलेख सार::–

हिन्दी साहित्य मे आत्मकथा लेखन पुरानी विद्या है। हिन्दी में अनेक आत्मकथांए लिखी गई है, परन्तु ओमप्रकाष वाल्मीकि द्वारा लिखित दलित आत्मकथा जूठन का भी हिन्दी साहित्य मे महत्वपूर्ण स्थान हैं। इस आत्मकथा के द्वारा ओमप्रकाष वाल्मीकि के साथ हुए अन्यायो, षोशण और दर्दनायक पीडाओं, यातनाओ और जातिगत भेद भाव को दर्षाया गया हैं। साथ ही पीडित मानवता और पूरे दलित समाज के साथ हुए बुरे व्यवहारो, षोशण एंव वर्ण व्यवस्था का वर्णन किया गया है, हमने यंहा एक ऐसी समाज व्यवस्था का वर्णन किया है जो बेहद ही क्रूर एंव अमानवीय है। हमने यहा उन सवर्ण जाति के लोगो पर करारा व्यंग्य किया है, जो दलित समाज के लोगो को तुच्छ व नीच समझते है, वे इन बातो से अनजान है कि सब मनुश्य समान होते हैं। कोई किसी के कहने से छोटा या बडा नही होता। यह सब हमारी सोच का फर्क होता हैं। दलित साहित्य दलित समाज की वास्तविकता की पहचान कराने वाला है। सदियो से आज तक उन बातो पर विचार किया गया जिनका अपमान, षोशण, दलन, प्रताडना आदि किया गया, उसे ही समाज मे दलित कहा गया।

मुख्य–षब्द::–

छुआछूत, दलित समाज की पीडाएं, जातिगत भेदभाव, षोशण और भ्रश्टाचार छुआछूत के प्रति विरोध।

दलित साहित्य की अवधारणा को समझने के लिए दलित षब्द की त्युत्पति को समझना आवष्यक है। इसमे दलित षब्द का स्वरूप स्वतः ही स्पश्ट हो जाएगा। दलित षब्द की अवधारणा को स्पश्ट करते हुए डा0 एन

ISSN: 2454- 2695

साहित्य संहिता

Volume 01 Issue 01
February 2015

Available at http://sahityasamhita.org/

सिंह लिखते है, दलित षब्द की त्युत्पति संस्कृत धातु 'दल' से हुई। इस षब्द के सन्दर्भ में विभिन्न षब्दकोषो मे विभिन्न अर्थ दिए गए है।

1. *''दल विकसना, फटना, खण्डित होना, 2. दल चूर्ण करना, टुकडे करना विदारना, 3. दल सैन्य, लष्कर, पत्र पत्ती। भारतीय समाज मे दलित के लिए विभिन्न षब्द प्रयुक्त होते रहे है। इनमे षुद्र सर्वाधिक प्रचलित षब्द है जिसका प्रयोग अधिकांष हिन्दु धर्मषास्त्रों मे हुआ।[1] ''*

इस प्रकार दलित षब्द के विभिन्न अर्थ स्पश्ट करते हुए हरपाल सिंह 'अरूश' का कहना है, दलित कहा जाने वाला ही कभी षुद्र अनार्य, अस्पृष्य अछूत और गांधी जी का हरिजन कहा जाता रहा हैं। इसमे आदिवासी, घुमंतु, अपराधषील, जातियां, महिलाएं और बंधुआ मजदूर भी सम्मिलित है।[2]''

कहने का अभिप्राय यह है कि सदियों से जिन के साथ अन्याय, षोशण, प्रताडित किया गया, जिन्हे पषुओ से भी बदतर माना गया, जिनको छूना भी पाप माना गया। दूसरे वर्गो की सेवा करना ही जिनका धर्म माना गया उसे ही समाज मे दलित कहा जाने लगा।

हमारे समाज मे अस्पृष्यता का ऐसा माहौल था कि कुत्ते, बिल्ली, गाय भैंस को छूना बुरा नही था यदि किसी षुद्र का स्पर्ष हो जाए तो उनके लिए बहुत बुरा था। इसी तरह एक सच्चाई यह भी है कि दलित आत्मकथांकार ओमप्रकाष वाल्मीकि को इस घटना का स्वंय सामना करना पडा। हमारे समाज में यथार्थ के रूप मे देखा जाए तो आज भी यह स्थिति बदली नही हैं। आज भी बहुत से लोग ऐसे है जिनकी सोच मे कोई बदलाव नही आया। इस प्रकार के व्यक्ति न तो स्वंय बदलना चाहते है और न ही दुसरो को बदलते हुए देखना चाहते हैं।

ऐसी ही एक आत्मकथा प्रमुख दलित आत्म कथाकार ओमप्रकाष वाल्मीकि की हे जिन्होने स्वंय ऐसी परिस्थितियो का सामना किया जो बहुत ही दर्दनायक व असंवेदनषील है। उन्होने अपने समय मे छुआछूत और वर्ण व्यवस्था का स्वंय सामना किया और उसका विरोध भी किया। ओमप्रकाष वाल्मीकि एक ऐसे आत्मकथाकार है जिन्होने दलित समाज के लोगो पर हो रहे अत्याचारो व षोशणो का कडा विरोध किया और पढ लिख कर आगे बढने का संदेष दिया।

ISSN: 2454- 2695
साहित्य संहिता
Volume 01 Issue 01
February 2015
Available at http://sahityasamhita.org/

श्री ओमप्रकाष वाल्मीकि का जन्म 30 जुन 1950 को बरला, जिला मुजफुरनगर उत्तर प्रदेष मे हुआ। स्थायी रूप से वे बरला गांव के रहने वाले थे। उनके गांव मे अस्पृष्यता का ऐसा माहौल था कि कुत्ते, बिल्ली गांय भैंस को छूना बुरा नही था, लेकिन चूहडे का स्पर्ष हो जाए तो पाप लग जाता था। लोगो के बच्चे उसे चूहडे का कहकर चिढाते थे। बरला गाँव मे कुछ मुस्लमान त्यागी भी थे। मुस्लमान त्यागियो का व्यवहार हिन्दुओ जैसा ही था। कभी कोई साफ सुथरे कपडे पहनकर कक्षा मे जाओ तो साथ के लडके कहते :–

''अबे चूहडे का नये कपडे पहनकर आया हैं।[3]''

कहने का तात्पर्य यह है कि उस समय अजीब हालात थे दोनो ही स्थितियो मे अपमानित होना पडता था। पर आज भी कई जगह पर वही स्थिति देखने को मिलती है। जिस प्रकार ओमप्रकाष वाल्मीकि को जातिगत भेदभाव, छुआछूत का सामना करना पडा उसी प्रकार आज भी जात – पात भेदभाव मे विष्वास किया जाता है। लोगो की सोच मे अब भी कोई बदलाव नही दिखाई देता। अस्पृष्यता के कारण ओमप्रकाष वाल्मिकि को हर वक्त पीडांए और दर्द सहन करना पडा।

अस्पृष्यता के कारण विद्यालय के विद्वान अध्यापकों द्वारा दलित विद्यार्थियो को बहुत कठोर दण्ड दिये जाते थे। अध्यापको का जो आदर्ष रूप ओमप्रकाष ने देखा वह अभी तक उनकी स्मृति से मिटा नही है। जब भी कोई आदर्ष गुरू की बात करता है तो हमें वे तमाम षिक्षक याद आ जाते है जो मां बहन की गालिंया देते थे, वे सिर्फ सवर्ण जाति के बच्चो को अपने पास बुलाते और उनके गाल सहलाते थे।

एक रोज हेड मास्टर कली राम ने ओमप्रकाष को अपने कमरे मे बुलाकर पुछा *क्या नाम है बे तेरा– 'ओमप्रकाष' उन्होने डरते डरते धीमे स्वर मे अपना नाम बताया। हेड मास्टर को देखते ही बच्चे सहम जाते थे। पुरे स्कूल मे उनकी दहषत थी।[4]''*

यह सब होने के बाद उनको रोम रोम यातना की गहरी खाई मे गिर रहा था। हर तरफ उन्हे अन्धेरा नजर आ रहा था। ओमप्रकाष यह सोचने पर मजबुर हो रहे थे आखिर हमने ऐसा कौन सा गुनाह किया है जिस बात की हमें सजा मिल रही है। हमे बिना वजह सताया जाता है, हर वक्त यातनाएँ दी जाती है। उस समय दलितो के बच्चो को स्कूलो मे पानी पीने तक की अनुमति नही थी। उन्हे अलग पंक्ति मे बिठाया जाता

ISSN: 2454- 2695

Volume 01 Issue 01
February 2015

था। कक्षा मे उन्हे सांस तक निकालने की इजाजत नही थी। उनकी दर्दनायक, पीडाग्रस्त स्थिति को समझने वाला कोई नही था। जब एक विद्वान अध्यापक द्वारा किसी दलित विद्यार्थी को मां बहन की गालिया दी जाती थी उस वक्त उनका रोम रोम पीडा अनुभव करता था। बार बार सभी दलित विद्यार्थियो को प्रताडित किया जाता था, और उन्हे अछूत कहकर कक्षा में अलग बिठाया जाता रहा।

एक दिन ओमप्रकाष वाल्मीकि के पिता जी ने हैडमास्टर का कडा सामना किया, हैड मास्टर कली राम ने उनके पिता को गाली देकर धमकाया। परन्तु पिता जी पर उनकी गाली का कोई असर नही हुआ। उस रोज जिस साहस और हौसले से पिता जी ने हैड मास्टर का सामना किया वह उसे कभी नही भूल पाया। हैडमास्टर ने तेज आवाज मे कहा था

''ले जा इसे यहां से............चूहडा होके पडाने चला है...........जा चला जा.......... नही तो हाड पांव तुडवा दूंगा।[5]''

उनके पिता को विष्वास था गांव के त्यागी मास्टर कलीराम की इस हरकत पर उसे षर्मिंदा करेगें। लेकिन हुआ ठीक उल्टा जिसका दरवाजा खटखटाया यही उत्तर मिला।

''क्या करोगें स्कूल भेजके यो कौवा बी कबी हंस बण सकै। तुम अपनढ गंवार लोग क्या जाणें विद्या ऐसे हासिल ना होती, अरे। चूहडे के जाकत कू झाडु लगाने कू कह दिया तो कोण सा जुल्म हो गया या फिर झाडु ही तो लगवाई है द्रोणाचार्य की तरियो गुरू दक्षिणा मे अंगूठा तो नही माँगा आदि आदि।[6]''

इस तरह उस बच्चे का जीवन संवेदनाओ से भरा हुआ था। हर दिन कक्षा मे डरा डरा बैठा रहता था। उनके पिता जी भी गहन पीडा भोग रहे थे, यहां उन बातो पर विचार किया गया है जिस स्कूल मे बच्चो को षिक्षा दी जानी होती है वहाँ दलित बच्चो से झाडु का काम करवाया जाता है। बार बार उन्हे अछूत कहकर प्रताडित किया जाता है। उन्हे उनकी ओकाद याद दिलाई जाती है।

हमारा भारत देष एक स्वतन्त्र देष कहलाता है। इसी स्वतन्त्र देष मे हम गुलामो की जिन्दगी जी रहे हे। ये कहां का न्याय हैं।

ऐसी ही छुआछूत से संबन्धित घटना उस समय की है जब सुखदेव सिंह त्यागी का पौता सुरेन्द्र किसी इंटरव्यू के षिलषिले मे गांव से पता

लेकर ओमप्रकाष के घर आया। रात मे उनके पास रूका, उनकी पत्नी ने सुरेन्द्र के लिए अच्छा खाना बनाया, खाना खाते खाते वह बोला–

''भाभी जी अपके हाथ का खाना तो बहुत जायकेदार हैं हमारे घर मे तो कोई भी ऐसा खाना नही बना सकता है।[7]*''*

ओमप्रकाष की पत्नी तो खुष हो गई परन्तु उनकी स्मृति मे वे बाते आ गई जो उन्होने बचपन मे स्वंय भोगी थी। बचपन की घटनाएं स्मृति का दरवाजा खटखटाने लगी।

सुखदेव सिंह त्यागी के वे षब्द मेरे सीने मे आज भी अपनी जलन से हमे झुलसा रहे है। जिनके पोते का हमने इतना आदर सम्मान किया। उन्हे अच्छा खाना खिलाया, अपने घर मे सोने के लिए जगह दी, उन्ही के दादा जी ने हमारे पुरे परिवार के साथ बुरा व्यवहार किया और हमे जूठन खाने के लिए मजबूर किया।

उस वक्त लोगो की आर्थिक व्यवस्था दयनीय थी गुजारा करना बहुत मुष्किल था। लोगो को दो वक्त की रोटी के लाले पडे थे।

लोग त्यागियो के खेतो मे गेंहु काटने जाते थे, तपती दोपहर मे गेंहु काटना बहूत कश्ट प्रद और कठिन होता था। कटाई करने वाले अधिकतर दलित ही होते थे। जिनके तन पर कपडे सिर्फ नाम भर के होते थे।

फिर भी अपने बच्चो के पालन पोशण के लिए दिन रात मेहनत मजदुरी करते थे, परन्तु मजदुरी देने मे ज्यादातर तगा कंजूसी बरतते थे। लोगो को ना नुकर के बाद भी जो मिलता था उसी में अपना गुजारा कर लेते। वे बेचारे घर आकर कुढते रहते और त्योगियो को कोसते रहते।

परन्तु भुख के सामने विरोध दम तोड देता था। उन्हे इक्कीस पुली पर एक पुली मेहनताना मिलती थी। एक भारी से भारी पुली मे भी एक किलो गेंहु मुष्किल से निकलता था। ओमप्रकाष की मां मेहनत मजदुरी के साथ साथ आठ दस त्यागियो के घर सफाई का काम भी करती थी। इस काम मे उनकी बहन भाभी तथा जसबीर और जनेसर मां का हाथ बटॉते थे। हर त्यागी के घर मे पन्द्रह बीस मवेषी होते थे।

आज जब वह इन बातो के बारे मे सोचता है तो मन मे कांटे से उगने लगते हें कैसा जीवन था, ऐसा लगता है मानो दर्द हर पीडा यातनांए उनका पीछा नही छोड रही हैं।

ISSN: 2454- 2695

साहित्य संहिता

Volume 01 Issue 01
February 2015

Available at http://sahityasamhita.org/

यहां उस समय की घटना को दर्षाया गया है जब बालक ओमप्रकाष ने स्कूल के सामने अपना मुंह खोला था। एक बार मास्टर साहब ने लगभग रूआंसा होकर बताया था कि द्रोणाचार्य ने भूख से तडपते अष्वत्थामा को आट्टा पानी घोल कर पिलाया था।

दूध की जगह द्रोण की गरीबी का दारूण नक्षा सुनकर पुरी कक्षा हाय हाय कर रही थी। यह प्रसंग द्रोण की गरीबी को दर्षाने के लिए महाभारतकार व्यास ने रचा था। ओमप्रकाष ने खडा होकर मास्टर साहब से एक सवाल पूछने की धृश्टता की थी, अष्वत्थामा को तो दूध की जगह आटे का घोल पिलाया था और हमे चावल का मांड। फिर भी महाकाव्य मे हमारा जिक्र क्यो नही आया। किसी महाकवि ने हमारे जीवन पर एक भी षब्द क्यों नही लिखा। पुरी कक्षा उनका मुंह देखने लगी थी। जैसे उन्होने कोई निरर्थक प्रष्न उठा दिया हो। मास्टर साहब चीख उठे थे।

''घोर कलयुग आ गया..............जब एक अछूत जबान जोरी कर रहा है।[8]*''*

उस मास्टर ने ओमप्रकाष को मुर्गा बना दिया। पढ़ाना छोडकर उसे बार बार चूहडा होने का उल्लेख करा रहे थे। उसने षीराम की एक लम्बी सी छडी किसी लडके को लाने का आदेष दिया।

''चूहडे के तु द्रोणाचार्य से अपनी बराबरी करे है........ले तेरे उपर मै महाकाव्य लिखूंगा.............. उसने उनकी पीठ पर सटाक सटाक छडी से महाकाव्य रच दिया था।[9]*''*

वह महाकाव्य आज भी ओमप्रकाष की पीठ पर अंकित हैं। भूख और असहाय जीवन के घृणित क्षणो मे सामंती सोच का यह महाकाव्य हमारी पीठ पर ही नही हमारे मस्तिश्क के रेषे रेष पर अंकित है। अष्वत्थामा के प्रतिषोध की ज्वाला हमने अनके बार अपने अन्दर महसूस की हैं, जो हमारी बेचैनी को और बढा देती है।

बरसो बरस चावल के मांड से बनी सब्जी खाकर अपने जीवन के अन्धेरे तहखानो से बाहर आने का संघर्श किया। मांड पी पीकर हमारे पेट फुल जाते थे। भुख मर जाती थी, यही गाय का दूध था हमारे लिए, यही था स्वादिश्ट भोजन भी। यही था दारूण जीवन जिसकी दग्धता मे झुलसकर जिस्म का रंग बदल गया है। इस प्रकार हम देखते है कि किन परिस्थितियो मे ओमप्रकाष का जीवन व्यतीत हुआ। कितनी यातनाए,

ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 01
February 2015

दुखदर्द, और पीडाओ का उन्होने सामना किया। किसी विद्‌वान अध्यापक द्वारा विद्यार्थी को बेवजह प्रताडित करना कहां की इन्सानियत थी।

ओमप्रकाष वाल्मीकी ने अपनी आत्मकथा जूठन मे स्वंय द्वारा भोगी गई यातनाओ, जातिगत भेदभाव, षोशण का वर्णन किया है। और उन तमाम दलित समाज के लोगो का यथार्थ वर्णन किया है जिनका उस समय सवर्ण जाति के लोगो द्वारा षोशण किया जाता था। गांव मे त्यागियो द्वारा उनके साथ छुआछूत की जाती थी। अगर उनके बच्चे स्कूल जाए तो वहां निर्दयी अध्यापको द्वारा उनका षोशण किया जाता था। दोनो ही स्थितियों मे उन्हें जातिगत भेदभाव का सामना करना पडता था।

निश्कर्श::–

अन्त मे कहा जा सकता है कि ओमप्रकाष वाल्मीकि द्वारा रचित दलित आत्मकथा जूठन मे लेखक के परिवार और स्वंय भोगी हुई पीडाओं, यातनाओं और षोशणो का वर्णन किया गया है। दलित आत्मकथा जूठन मे ओमप्रकाष वाल्मीकि द्वारा समाज को सत्य षक्ति निडरता पर वार करने की षक्ति मिलती है। यहा वर्ण व्यवस्था प्रताडित करना व छुआछूत के सामने खुला विद्रोह मुखरित हुआ है। यहां उन्होने षिक्षको पर करारा व्यंग्य किया है जो विद्‌वान षिक्षक होते हुए भी विद्यार्थियो से बुरा व्यवहार करते है। जूठन आत्मकथा मे जातिगत भेदभाव व षोशण के प्रति आवाज उठाई गई। सदियो से पीडित मौन दलितो मे नई उर्जा, चेतना भरने का कार्य लेखक ने स्वंय किया है। अगर सही रूप से देखा जाए तो क्यां यह स्थिति आज बदल चुकी है, नही क्योंकि आज भी बहुत से ऐसे गांव है जंहा दलितो के साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। यह तब तक चलता रहेगा जब हम स्वंय को नही बदलेगें। अगर हमारे परिवार मे बच्चो को अच्छे संस्कार दिए जाए तो यह छुआछूत की भावना जड से ही खत्म हो जाएगी। स्कूलो मे भी अध्यापको द्वारा बच्चो को अच्छी षिक्षा दी जानी चाहिए ताकि अस्पृष्यता जैसी बिमारी को जड से खत्म किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:–

1. एन सिंह, *दलित साहित्य के प्रतिमान*, वाणी प्रकाषन, नयी दिल्ली प्र0–2012
2. हरपाल सिंह 'अरूश', *दलित साहित्य की भूमिका*, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, प्रकाषन. 2005
3. ओमप्रकाष वाल्मीकि, '*जूठन*', राधा कृश्ण प्रकाषन 1997 नई दिल्ली, पृश्ठ–13
4. *उपरिवत्*, पृश्ठ 14
5. *उपरिवत्*, पृश्ठ 16
6. *उपरिवत्*, पृश्ठ 17
7. *उपरिवत्*, पृश्ठ 20
8. *उपरिवत्*, पृश्ठ 34
9. *उपरिवत्*, पृश्ठ 35